मीठी शहद की कहानी, मधुमक्खी पालक नरेन्द्र मालव की जुबानी

मैं नरेन्द्र मालव पुत्र श्री कालू लाल मालव ग्राम डंगावद पंचायत समिति सुल्तानपुर, जिला कोटा का निवासी हूँ। हमारा पुश्तैनी धंधा खेती बाडी थी। इससे हमारे परिवार का गुजर बसर नहीं हो पाता था। एक दिन जब मैं सो कर उठा तो देखा कि पूरे गाँव में कोतूहल सा मचा हुआ था। खेतों में सब तरफ लकडी के बक्से रखे हुऐ थे जिनमें से मक्खियां निकल रही थी। मेने गाँव वालों से पूछा तो पता चला कि कुछ लोग बाहर से हमारे गाँव में आकर सरसों के खेतों के समीप मधुमक्खी पालन का कार्य कर रहे है। मुझे यह जानकर बडा आश्चर्य हुआ कि मधुमक्खी पालन भी किया जाता है। पहले तो मुझे मक्खियों के काटने का डर लगा लेकिन जब मेने उन लोगों को बक्से खोलते–बन्द करते एवं शहद निकालते देखा तो मेरा मनोबल बढा और में उन मधुमक्खी पालकों के पास गया। उनसे इस उद्यम के बारे में पूछा तो पता चला कि मधुमक्खी पालन भी एक आय का जरिया हो सकता है। मेने जब उनसे इस कार्य की पूर्ण जानकारी ली तो पता चला कि बहुत कम लागत–मेहनत से अच्छा लाभ कमाया जा सकता है। मेने सोचा कि जब बाहर के लोग यहां आकर कमा सकते हैं तो मैं यह क्यों नहीं कर सकता। मेने इस हेतु उद्यान विभाग के कार्यालय में सम्पर्क किया तो मुझे पता चला कि बागवानी मिशन के तहत मधुमक्खी पालन करने हेतु अनुदान भी दिया जाता है।

मधुमक्खी पालन करने हेतु मैने उद्यान विभाग द्वारा संचालित कई प्रशिक्षणों में भाग लिया। इससे मेरा उत्साह एवं आत्मविश्वास और अधिक बढ गया था। मेने भी मधुमक्खी पालन का कार्य करने की ठान ली। वर्ष 2004 में मैंने 5 बक्सों से यह उद्यम शूरू किया, जिनसे पहले ही साल में करीब 80 किलो शहद निकाला था। इस कार्य में मेरे बढे भाई महेन्द्र कुमार मालव ने कन्धे से कन्धा मिलाकर मेरा सहयोग किया, और सरसों की फसल में उसे रखा। वर्ष 2005 में उद्यान विभाग से बागवानी मिशन के तहत 140 बक्से अनुदान पर लिये जिनसे करीब 30 क्विंटल शहद निकाला, जिसकी बिक्री से 1.25 लाख की आमदनी हुई। उस वक्त पंजाब की कम्पनी द्वारा कार्य स्थल से शहद खरीदकर ले गयी थी। पहली बार 2009 में झालावाड़ जिले में सन्तरों की बगीचों में भी बी–बॉक्स रखे थे। मधुमक्खी पालन से वर्ष 2009 में मुझे करीब 8.00 लाख रूपये की आमदनी हुई। मैंने स्वयं के स्तर से एवं परिवार के सहयोग से मधुमक्खी कॉलोनी को बढाकर इतना सुदृढ कर लिया कि वर्ष 2008–09 में मधुमक्खी प्रजनन (बी–ब्रीडर) बन गये व अन्य कृषकों को मधुमक्खी कॉलोनी व बक्से सप्लाई करने लगे।

वर्ष 2007 में स्वतंत्रा दिवस एवं वर्ष 2010 में गणतंत्र दिवस समारोह में श्रीमान् जिला कलेक्टर महोदय द्वार जिला स्तर पर मधुमक्खी पालन में उत्कृष्ठ एवं सराहनीय कार्य करने हेतु सम्मानित किया गया। आत्मा, कोटा द्वारा आयोजित जिला स्तरीय कृषि मेला 2008 एवं प्रदर्शनी 2009 एवं 2010 में शहद प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। मेने व्याख्यता के रूप में महिला उद्योग प्रशिक्षण समिति द्वारा अभ्यारण उत्पाद कल्स्टर बांरा में मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण वर्ष 2008 में 60 दिवसों तक मधुमक्खी पालन करने वाले इच्छूक कृषकों को प्रदान किया।

वर्तमान में मेरे एवं परिवार के सदस्यों के पास कुल 500 मधुमक्खी के बक्से है जिनसे लगभग 150 क्विटंल शहद का उत्पादन होता है और इनसे लगभग 10.00 लाख रूपये प्रतिवर्ष की आय हो जाती है। मुझे देखकर मेरे व आस–पास गाँव के कई कृषक एवं बेरोजगार युवा प्रोत्साहित हुऐ एवं उनका रूझान मधुमक्खी पालन की और बढा है। इसमें लगभग 400–500 लोग उद्यान विभाग के सम्पर्क में आकर राष्ट्रीय बागवानी मिशन से जुड़कर मधुमक्खी पालन का कार्य कर रहे है। मधुमक्खी पालन से हमारे गाँव व पंचायत समिति सांगोद की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

वर्ष 2011 में मालव मधु उद्योग (कोटा शहद) के नाम से लघु उद्योग के रूप में संचालित किया जा रहा है जिसमें शुद्ध प्राकृतिक शहद की बिक्री की जा रही है। मधुमक्खी पालन उद्योग से जुडे समस्त मधुमक्खी पालकों को एकत्रित कर एफ.पी.ओ. बनाने का कार्य जारी है। जिससे कि इस व्यवसाय से उत्पन्न शहद की प्रोसेसिगं एवं मूल्य संवर्धन कर विक्रय किया जा सके जिससे की मधुमक्खी पालकों को अधिक आमदनी प्राप्त हो सकें।

HALL
CONFERENCE

30
मालव मधु उद्योग
ग्राम डूंगावद